International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 13-04-2025, Accepted: 14-05-2025, Published: 29-05-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 60-61

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में गांधी की प्रासंगिकताः भ्रष्टाचार के विशेष संदर्भ में

मनीषा चौधरी
राजनीतिक विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
दुनिया के सबसे सफल लोकतंत्र संयुक्त राज्य अमेरिका ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों द्वारा जारी किए गए बयानों के संदर्भ में राजनीतिक परिपक्वता का परिचय देते हुए गांधी के आदर्शों को अपनाने की बात कही है। गांधी के विचार और सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है क्योंकि वे मानव मूल्यों, सत्य, अहिंसा और सामाजिक न्याय पर आधारित हैं। गांधीवादी विचार व्यापक रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन के प्रेरणा पाते हैं और जिनकी प्रासंगिकता अब भी बरकरार है। वैश्वीकरण के इस दौर में "वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा गांधीजी के कारण ही प्रासंगिक है। आज इस आतंक, जातिवाद, भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिक तनाबव में घिरे विश्व के लिए गांधीवाद ही एक रास्ता है जिसके माध्यम से शांति एवं सद्भाव स्थापित किया जा सकता है। गांधी की अहिंसा, सत्याग्रह, नई तालीम, ट्रस्टीशिप, करूणा, सत्य, सरल जीवन और उच्च विचार जैसे आदर्श भ्रष्टाचार के निराकरण में सहायक हैं।

मूल शब्दः राजनीतिक परिपक्वता, अहिंसा, सत्याग्रह, भ्रष्टाचार, करूणा, वसुधैव कुटुम्बकम

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अंहिसा और शांति की जिस उत्कृष्ट विचारधारा को खड़ा किया था, वह न केवल समय की कसौटी पर खरी उतरी है बल्कि वर्तमान शताब्दि में वैश्विक शांति की चिरस्थायी खोज के लिए प्रासंगिक भी बन गई है। वर्तमान भारत की डांवाडोल राजनीतिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने में गांधी की प्रासंगिकता निर्विवाद है। भ्रष्टाचार के मामलों, उन्हें उजागर करने के तरीको व भ्रष्टाचार विरोधी जन आंदोलनों के संदर्भ में गांधीवादी तरीकों का प्रयोग कितना सही है, व कितना गलत. इन्हीं बिन्दुओं पर विश्लेषणात्मक लेख अग्रवर्णित है ।

समय की कसौटी पर गांधीवाद की प्रासंगिकता को ना केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी खरा पाया गया है जैसा की प्रो. गियर लुण्डेश्टड ने गांधीजी को नोबेल शांति पुरस्कार नहीं देने के संदर्भ में कहा है कि– "गांधी शांति पुरस्कार के बिना रह सकते हैं, परन्तु नोबेल शांति पुरस्कार का प्रबंधन गांधी के बिना नहीं किया जा सकता है।"

इसी प्रकार लेक वलेसा (पौलेण्ड के राष्ट्रपति) ने अपनी नई दिल्ली यात्रा के दौरान सत्याग्रह आंदोलन के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर कहा कि–

"जब हम हिंसा के साथ लड़ते है तो असफल हो जाते है, परन्तु जब हम अहिंसा के गांधीवादी तरीके को अपनाते हुए लड़ते है. तो सफल हो जाते है।"

सत्य, अहिंसा, प्रेम, भाईचारा सज्जनता, व मानव मात्र के कल्याण जैसे आदर्श विचारों से ओतप्रोत महात्मा गांधी के विचार एवं सिद्वान्त आज सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो गए है।

भ्रष्टाचार के सर्वप्रमुख कारणों में से एक है, ईमानदारी, मूल्यों व नैतिकता की कमी यहाँ पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का स्वराज्य से संबंधित नैतिक आयाम – आत्मसंयम एवं आत्मनियम मील का पत्थर साबित हो सकता है। गांधीजी का लक्ष्य राजनीति को नैतिकता या आध्यात्मिकता के साथ एकीकृत करके उसकी प्रकृति में बदलाव माना था। गांधीजी न केवल स्वयं लोगों की निःस्वार्थ भाव से पूरी तत्परता व समर्पण से सेवा करके एक बेहतरीन आदर्श उपस्थित करते थे बल्कि कहते भी थे कि "मैंने नीतिशास्त्र से अपनी राजनीति हासिल की है तथा राजनीति में मैं नीतिशास्त्र से बंध गया है।"

1937 में कांग्रेस द्वारा गर्वनमेंट ऑफ इन्डिया एक्ट 1935 के तहत् 6–प्रांतो में सरकार बनाई थी, जिसके कुछ मंत्रियों के भ्रष्टाचार में लिप्त होने की जानकारी मिलने के बाद मई 1939 में बेहद नाराज होने के बाद गांधीजी ने कहा था,

"मैं पॉव पसार चुके भ्रष्टचार के साथ बनाये रखने की बजाय पूरी कांग्रेस को अच्छी तरह दफन करना चाहूँगा।"

भारतीय राष्ट्र के चरित्र की शुद्धता पर जोर देते हुए गांधीजी ने यंग इन्डिया में 6–दिसम्बर 1928 में लिखा था कि, "भ्रष्टाचार एक दिन उजागर हो जाएगा, हालांकि इसे छिपाने का प्रयत्न किया जाएगा, लेकिन जनता इसे उजागर करेगी, क्योंकि हर न्यायसंगत संदेह के मामले में सेवकों को कड़े दण्ड के लिए बुलाना, उन्हें बर्खास्त करना, कोर्ट में उनके खिलाफ मुकदमा चलाना या फिर उनके आचरण की जैसी जॉच जनता चाहती है वैसा मध्यस्थ या निरीक्षक नियुक्त करना कर्त्तव्य और अधिकार बनता है।"

अपने सभी आंदोलनो के दौरान गांधीजी ने लोगो से भ्रष्ट गतिविधि, रिश्वतखोरी व लेन–देन के सभी मामलों को उजागर करने और इसे पूरी तरह जड़ से उखड़ने के उपाय अमल में लाने का आह्वान किया। उनके अनुसार,

"भ्रष्टाचार के झूठे आरोप में कोर्ट में किसी को घसीटने की जगह लोगों के लिए सबसे बेहतर और एकमात्र सही रास्ता असली भ्रष्टाचार की रोकथाम है।"

राष्ट्र हित व राष्ट्र निर्माण की भावना का स्वहित के आग कमजोर पड़ जाना, भ्रष्टाचार का एक मुख्य कारण है। इस सन्दर्भ में 16 दिसम्बर 1947 को श्द हिन्दू' में गांधीजी की नाराजगी निम्न प्रकार जाहिर की गई–

"किसी भी पार्टी या विचारधारा से जुड़े हर प्रमुख व्यक्ति की भारत की गरिमा की रक्षा करने की जिम्मेदारी बनती है। कुशासन व भ्रष्टाचार के रहते यह गरीमा बची नहीं रह सकती। कुशासन व भ्रष्टाचार हमेशा सहचर की तरह रहते है। मैं अपने विश्वस्त स्त्रोतों के आधार पर कह रहा हूँ कि हमारे देश में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। क्या हर कोई सिर्फ अपने बारे में सोचने लगा है, सम्पूर्ण भारत के लिए नहीं ?"

'इन्डिया अगेंस्ट करप्शन' (IAC) के सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री अरविन्द केजरीवाल द्वारा हाल ही में उजागर किए गए भ्रष्टाचार के व्यक्तिगत मामलों से स्पष्ट होता है कि भ्रष्टाचार के पीछे व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद व दिखावे की संस्कृति मुख्य उत्तरदायी कारक है। यहाँ भी गांधीजी के सिद्वान्तों का पालन करके भ्रष्टाचार पर काबू पाया जा सकता है। गांधीजी ने व्यक्तिवाद का विरोध किया तथा सामुदायिक व्यवस्था पर बल दिया है। गांधीजी ने स्पष्ट तौर पर प्रकाश डाला है कि व्यक्ति, परिवार, समुदाय और समाज जब कार्य कर रहे होते है तब इनमें अंतः निर्भरता बनी रहती है। इस अंतः निर्भरता में ही जीवन का अर्थ है व्यक्ति से समुदाय का पारस्परिक संबंध छोटी से छोटी इकाईयों का बड़ी इकाईयों के कल्याण के लिए त्याग की भावना की व्यवस्था करता है।

भ्रष्टाचार का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है, नीति निर्माण में पारदर्शिता की कमी तथा कुछ गिने चुने लोगों द्वारा नीति निर्माण को अंजाम देना । भ्रष्टाचार के इस कारक के संदर्भ में गांधीजी का स्वराज (भागीदारिता लोकतंत्र) प्रासंगिक बन पड़ा है। गांधी जी लोकतंत्र को पूर्ण स्वराज रामराज्य सर्वोदय के रूप में दर्शाते थे। यानि एक ऐसी पद्धति जहाँ स्वामित्व, रंग, नस्ल, या लिंग आधारित गैर बराबरी खत्म हो जाए तथा भूमि व राज्य पर जनता का स्वामित्व हो । नीति निर्धारण की प्रक्रिया मुटठीभर लोगों के हाथ में सिमटे रहने की बजाय सभी की भागीदारिता युक्त हो। फैसले लेने में साझा हितों का ध्यान रखा जाए।

सरकार, जनप्रतिनिधियों व प्रशासकों में उत्तरदायित्व की भावना का अभाव भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। यहाँ भी गांधीजी का उत्तरदायित्व संबंधि सिद्धान्त अनुसार व्यक्ति की ज्यादा प्रासंगिक व उल्लेखनीय साबित होता है। उनके भूमिकाएँ व उत्तरदायित्व होते हैं जो उसे अपने लिए न करके दूसरों के लिए करने होते है। व्यक्ति को इन भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए स्वधर्म का पालन करना चाहिए। सम्पूर्ण भूमिका निभाता हुआ व्यक्ति अपनी आत्मा को शुद्ध पूर्ण एवं रूपान्तरित करता रहता है। एक जिम्मेदार व्यक्ति ही समाज का कल्याण व भलाई कर पाता है। जिससे सुशासन का आविर्भाव होकर भ्रष्टाचार का खात्मा होता है। क्योंकि गांधीजी के अनुसार – "बूरे समाज में भला शासन असंभव है।" अतः जनता की व्यापक भागीदारी युक्त कार्यक्रमों में भ्रष्टाचार की संभावना नगण्य होती है।

सत्ता व शासन की शक्तियों तथा प्राधिकार का संकेन्द्रण भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। स्वविवेकाधिकार का बढ़ना भी भ्रष्टाचार को बढ़ाने में अहम भूमिका अदा करता है। इस संदर्भ में गांधीजी की विकेन्द्रीकरण से संबंधित ग्रामस्वराज की अवधारणा महत्वपूर्ण है। उन्होंने जनता व उनके कार्यो को केन्द्र में रखते हुए व्यक्ति केन्द्रित व सहभागिता केन्द्रित निचले स्तर के संगठनों पर आधारित शासन व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत की। जनसम्प्रभूता आधारित इस व्यवस्था में जनता के पास राज्य की शक्ति के दुरूपयोग की प्रवृत्ति का प्रतिरोध करने की शक्ति होती है।

आज भ्रष्टाचार में अति तीव्र वृद्धि हुई है, जिसका विश्लेषण करने और सही समाधान ढूढ़ने के लिए गांधीजी सबसे ज्यादा प्रासंगिक और उल्लेखनीय हो जाते है। भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक औषधि के रूप में गांधीजी सक्रिय और जागरूक नागरिकता को अत्यावश्यक मानते थे। वे सभी क्षेत्रों में नीति निर्माण प्रक्रिया में जागरूक लोगों की सक्रिय भागिदारिता के पक्षधर थे। जनमत को संगठित कर आम लोगों को भ्रष्टाचार के खिलाफ एक नैतिक मंच मुहैया करानेवाला अन्ना हजारे का आन्दोलन यहाँ गांधीवादी विचारों से सम्पूर्ण तादात्म्य स्थापित करता नज़र आया। यदि हम लोकतंत्र व स्वतंत्रता के बारे में गांधीजी के विचारों का सन्दर्भ लें तो अन्नादृआंदोलन कहीं से भी अतार्किक नजर नहीं आयेगा ।

गांधीजी ने बढ़ते भ्रष्टाचार की सख्त निंदा करके इसके खिलाफ सख्ती से लड़ने की बात की थी। नैतिक व बेदाग छवि वाले लोगों द्वारा भ्रष्टाचार की कड़ी निगरानी करने का आह्वान करते हुए गांधीजी ने कहा था कि– "भ्रष्टाचार के प्रति उदासीनता व आँखे मूंदे रहना एक अपराध होगा।" इस संदर्भ में भ्रष्टाचार के खिलाफ तमाम जनआंदोलन गांधीजी से प्रेरित नजर आ रहे हैं।

लालच सभी बुराइयों की जड़ है। उदारीकरण व वैश्विक अर्थव्यवस्था के इस युग में लाभ से प्रेरित आर्थिक गतिविधियाँ भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने के यहाँ पर गांधीजी का श्ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त महत्वपूर्ण बन जाता है। इसके द्वारा धन के केन्द्रीयकरण, असमान वितरण व आर्थिक असमानताओं को खत्म किया जा सकता है। वंचित तबकों के लिए अमीरों को अपना योगदान देना चाहिए ।

सारांशतः लोकतंत्र में गांधीजी के सुधारवादी व प्रासंगिक उपायों को समन्वित रूप से प्रयोग में लेकर लोकतंत्र की सबसे वर्णित समस्या भ्रष्टाचार का सामना किया जा सकता है। इस हेतु नई समाज व्यवस्था के निर्माण करते समय ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त रचनात्मक कार्यक्रम, आत्मनियंत्रण के व्रत, जमीनीस्तर पर संगठित पंचायत व नागरिक समाज की भागिदारिता को ध्यान में रखना अति आवश्यक है। समाज में सोहार्द्रपूर्ण संबंध की गतिशील प्रक्रिया में व्यक्ति को संरक्षण बचत तथा संसाधनों के संरक्षण की दिशा में आगे बढ़ते हुए गांधीजी के विचारों को सम्बल प्रदान करना चाहिए। ताकि मानवमात्र का समग्र कल्याण सुनिश्चित किया जा सके।

संदर्भ

1. सामार द हिन्दु, 18 अक्टूबर 2012, 11 सितम्बर 2012 सागा प. 1986 दिल्ली
2. श्पोलिटिकल पोट्स इन मॉडर्न इंण्डिया',
3. महात्मा गांधी
4. हिंद स्वराज (हिन्दी अनुवार) 1959, नवजीवन
5. ष्महात्मा गांधी" (एस. राधाकृष्णन् द्वारा संपादित)
6. एम. के. गांधी, आत्मकथा, नवजीवन, अहमदाबाद 1948
7. इंण्डिया आफ्टर गांधी गुहा रामचन्द्र, मेकमिलन, लंदन 2007 (यंग इंण्डिया, हरिजन)
8. सामार बीबीसी दिनांक 25 अगस्त 2009
9. इंण्डिया अगेन्स्ट क्रप्शनश की बेब–साइटः